समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्रिका

संस्करण – द्वितीय माह – जून

Edition - II Month - June

कोरोना काल में मजबूरों का पलायन

भारत ने सही समय पर लॉक डाउन लगाकर कोरोना को रोकने का भरपूर प्रयास किया परंतु जीवन भर तो लॉकडाउन लगाया नहीं जा सकता है समस्त मानवीय गतिविधियों को रोका नहीं जा सकता है। चरणबद्ध तरीके से लॉकडाउन 1.0 2.0 3.0 के बाद 4.0 तक पहुंचते हुए काफी हद तक रियायतो के उपरांत देश के विभिन्न राज्यों से अन्य राज्यों में जाकर काम करने वाले कामगर मजदूरों में कोरोना की विभीषिका और रोजगार की कमी के कारण अपने घरों की तरफ पलायन करने की मजबूरी पैदा हो गई। परिवहन के साधनों के अभाव में लाचारी की दशा में यह लोग पैदल ही अपने घरों की तरफ हजारों किलोमीटर का सफर करने को मजबूर हो गए ।केंद्र व राज्य सरकारों ने इन्हें रोकने तथा बेहतर सुविधाएं देने की भरपूर कोशिशें भी की। परंतु बिचौलियों, भ्रष्टाचारियों ने सरकारी योजनाओं को धराशाई कर दिया। ज्यादातर क्वॉरेंटाइन केंद्रों में अव्यवस्था का बोलबाला है। कहीं–कहीं तो ऐसी स्थिति है कि भोजन और पानी के लिए लूटमार हो रही है सोशल डिस्टेंसिंग खोखले शब्द बनकर रह गए हैं हकीकत से इसका कोई वास्ता नहीं है इस अवस्था में सरकार ने परिवहन की सुविधाओं को भी शुरू किया। परंतु बड़े शहरों में मजदूरों की तादाद इतनी ज्यादा है कि तमाम साधनों से भी एक साथ इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना असंभव ही है घर जाने की जल्दी बाजी में यह लोग ट्रकों कंटेनरों में झुंड की तरह से बैठकर जाने पर मजबूर हो गए हैं इसका भरपूर लाभ नियम तोड़ने वाले दुष्ट प्रवृत्ति के लोग उठा रहे हैं। जगह–जगह दुर्घटनाएं हो रही है जिसका खामियाजा इन मजदूरों को ही उठाना पड़ रहा है जान से भी माल से भी। हमारा प्रांतों की सरकारों से अनुरोध है जब तक इन्हें अपने घरों तक नहीं पहुंचाया जा पा रहा है तब तक इनकी उचित प्रकार से भोजन आदि मौलिक जरूरतें पूरी की जाए तथा इन्हें जमीनी रूप से व्यवस्थित किया जाए क्योंकि यहां अव्यवस्था का पूर्णतः बोलबाला है। जमीनी स्थिति यह है कि क्वॉरेंटाइन केंद्रों में बस लोगों को लाकर रख दिया जा रहा है ना तो कोई खबर ली जा रही है ना ही भोजन इत्यादि की उचित व्यवस्था की जा रही है। जगह–जगह क्वॉरेंटाइन केंद्रों में तोड़फोड़ और हंगामे की खबर आ रही है । इस अवस्था पर विराम लगाना सरकार का प्रथम दायित्व होना चाहिए।

तरुण सिंह

मानवता की पुकार (भाग–२)

चीन में जन्मे कोरोनावायरस को प्राप्त करने की अमेरिकी चाहत ने कोरोना विस्फोट की स्थिति को जन्म दे दिया। वर्ष 2019 में हांगकांग में हुए आजादी के आंदोलन को पूर्णतःदमन करने के लिए कोरोना नामक जैविक हथियार का निर्माण किया चीन की वुहान लैब में। कोरोनावायरस ने जो महामारी फैल आई वह विश्व वि□त है संक्रमण और मौत का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है दवा और ऐक्शन प्राप्त नहीं हो सकने के कारण कोई निश्चित उपचार भी नजर नहीं आता सिवाय सोशल डिस्टेंस है और विश्व के समस्त विशेषज्ञों वैज्ञानिकों और डॉक्टरों द्वारा दिए गए निर्देशों के अलावा। एक ओर जहां संपूर्ण विश्व कोरोना नाम की विभीषिका में जल रहा है वहीं भारत की परिस्थितियां ही अत्यंत भयावह होती जा रही है ।भारत आबादी के हिसाब से विश्व में दूसरे स्थान पर है और यहां भारी संख्या में लोग छोटे–छोटे गांवों से बड़े–बड़े शहरों में जाकर मेहनत मजदूरी करते हैं। अपनी पारिवारिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए ।कोरोना के कारण हुए लॉकडाउन में जहां कल– कारखाने छोटी–बड़ी कंपनियां अर्थात देश की लगभग सभी आर्थिक गतिविधियां जिनके माध्यम से श्रम द्वारा मजदूरों को रोजगार प्राप्त होता था बंद हो गई रोजगार का साधन समाप्त होने के बाद लॉकडाउन के बाद मजदूरों की स्थिति ऐसी हो गई थी कि उनके ज्यादा पैसे समाप्त हो चुके थे और महामारी के स्थिति में कोई सुधार होता हुआ नजर नहीं आ रहा था। इस परिस्थिति में ज्यादातर लोगों ने अपने घर जाने को ही उचित जानकर सफर शुरू कर दिया सवारी नहीं मिलने पर ट्रकों टैंकरों कंटेनरो आदि विभिन्न मालवाहक सवारियों में किराए से अधिक पैसा देकर जाना प्रारंभ हुआ सोशल डिस्टेंसिग की धज्जियां उड़ गई और जहां पुलिस ने पकड़ा वहीं आसपास के स्कूलों इत्यादि में क्वॉरेंटाइन कर दिया। राज्य व केंद्र सरकार ने क्वॉरेंटाइन केंद्रों की उचित रखरखाव के निर्देश दिए परंतु भ्रष्टाचार बिचौलिए और दलाल सिस्टम को अपनी सुविधानुसार उपयोग करते नजर आए और ज्यादातर क्वॉरेंटाइन केंद्रों में अव्यवस्था व्याप्त हो गई। परिणाम स्वरूप बहुत सारे केंद्रों में भोजन, पानी देखरेख के अभाव में लोग उग्र हो गए और वहां हंगामे भी हुए और तोड़फोड़ भी यह स्थिति अत्यंत भयावह है। सरकार ने 4.0 के दौरान विभिन्न रियायतें भी दीं और परिवहन की व्यवस्था भी की परंतु इतनी अधिक संख्या को एक समय में स्थानांतरित करना संभव नहीं हो सकता। इसके बाद शुरू हुआ राजनीति का दौर। पक्ष और विपक्ष पार्टियां टीवी चैनलों पर डिबेट करने लगी तेरी बस या मेरी बस। कुछ बड़े नाम व नेता मतलब जैसे माननीय राहुल गांधी मजदूरों के बीच बैठकर पर चर्चा करने लगे और अपने यूट्यूब चैनल पर मजदूरों की दुख भरी कहानियां सुनाने लगे और अपने यूट्यूब चौनल का लिंक शेयर करने लगे। वर्तमान कांग्रेस अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी देश की सभी विरोधी पार्टियों के साथ बैठक कर सरकार की नीतियों और लॉकडॉउन उनको लोकतंत्र की हत्या जैसे अलंकारों से विभूषित करने लगी। यहां सोचने वाला प्रश्न यह है कि ऐसी विषम परिस्थितियों में जबकि देश ही नहीं संपूर्ण विश्व और मानवता सिसक सिसक कर दम तोड़ रही है चारों और मौत का सन्नाटा और संक्रमित व मजदूरों के रुदन का शोर व्याप्त है इस अवस्था में प्रजातंत्र नेतृत्व करने की चाहत रखने वाले यह माननीय नेतृत्वकर्ता इतनी ऊंची राजनीति में लिप्त कैसे हो सकते हैं? यह तो हत्या है ,सत्ता लोलुपता की आड़ में मानवता की मानवीय, मूल्यों की और भारतीय सनातन संस्कृति की। क्या हम कभी इस स्थिति से उबर पाएंगे और देश को दे पाएंगे स्वच्छ और सच्चा वातावरण?

संपादक
तरुण सिंह

विशेंष– समाचार पत्रिका (समृद्ध भारत) को पढ़ने के लिए सर्वप्रथम वेबसाइट naad anusandhan.org को खोलें उसके बाद प्रकाशन (publication) के विकल्प को चुनें सामने समाचार पत्रिका दिखाई देगी। यदि आप कम्प्यूटर अथवा लैपटॉप पर खोलेंगे तो रोलर को नीचे करने पर समस्त पृष्ठों को एक के बाद एक सामने पायेंगे । यदि आप स्मार्टफोन के द्वारा प्रकाशन के विकल्प तक उपरोक्त क्रम से ही जायेंगे, परन्तु पत्रिका के अन्य पेजों को खोलने के लिए पत्रिका के प्रथम पेज को एक बार टेप करें उसके बाद डाउनलोड करने का विकल्प सामने आयेगा । डाउनलोड को चुनें, उसके बाद स्लाइड करें । एक के बाद एक पेज सामने आते चले जायेंगे।

संपादकीय विभाग

समृद्ध भारत जागृति

ॐ

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नम

पूर्ण बंदी बनाम महामारी

वर्तमान शताब्दी की भयंकर त्रासदी कोरोना वायरस से उत्पन्न महामारी की स्थिति से पूरा विश्व आतंकित है। अभी तक के शोध परिणाम यही बता रहे हैं के सुरक्षात्मक उपकरण जैसे मास्क, दस्ताने , अधिकतम शरीर ढकने वाले वस्त्र ,सफाई का ध्यान, सामाजिक दूरी बनाए रखना इन नियमों का पालन ही इससे बचाव का एक उपाय है। ऐसी स्थिति में अपने गंदे इरादों से कोरोना को विकृत कर महामारी के रूप में समाज में फैलाने का जिम्मेदार देश चीन सहित संपूर्ण विश्व मानव प्रजाति पूर्ण बंदी का पालन करने पर मजबूर है। स्वाभाविक रूप से यह स्थिति मानव सभ्यता की वर्तमान चल रही शैली पर विपरीत प्रभाव डालने के साथ ही वैश्विक स्तर पर आर्थिक व्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। मानव जीवन के एक बहुत बड़े वर्ग का जीवन अस्त–व्यस्त हो रहा है। लगभग 5 महीने से प्रारंभ यह संक्रामक दौर आज करीब 3 महीने से पूर्ण बंदी की मार झेल रहा है। निश्चित ही अधिकारिक रूप से यह स्थिति अब और अधिक नहीं चल सकती। भारत में पूर्ण बंदी चौथे चरण के युवा काल में है। हमारे देश में संक्रमित लोगों के ठीक होने की दर बाकी देशों की तुलना में अत्यधिक संतोषजनक है। एक रूप से इसका से देश की जागरुक जनता को तो निष्पक्षता व ईमानदारी से यह कहना के प्रधानमंत्री पद का वास्तविक सदुपयोग करने के साथ ही व्यक्तिगत प्रतिभा व क्षमता का प्रयोग करते हुए इस विराट परिस्थिति में भी अपने सराहनीय प्रयासों से हम सभी संतोषजनक परिणाम प्राप्त कर पा रहे हैं। परन्तु अब देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है पूर्ण बंदी से संबंधित निर्देशों की गंभीरता को समझते हुए अपनी वर्तमान जीवनशैली में इन नियमों को समावेशित करने की आवश्यकता स्वयं अनुभव करें। यह सही है कि जीवन शैली में यह आकस्मिक परिवर्तन सभी के लिए कठिन कार्य है ।परंतु हमें यह समझना होगा कि मानवता पर आया यह संकट संपूर्ण रूप से प्राकृतिक आपदा नहीं बल्कि अपने ही प्रजाति द्वारा वैमनस्यता के बीज को अंकुरित करने के प्रयास का परिणाम है। तो दंड तो भोगना ही होगा और दंड विधान सुधार के लिए ही होते हैं। हमें समझना चाहिए कि अपने जीवन को सुखी व समृद्ध करने के प्रयासों में लगा मानव मस्तिष्क प्रकृति के गर्भ से ही उपादान संयोजित कर संसाधनों का आविष्कार करने में सक्षम होता है। हमें हमारी इच्छानुसार सब कुछ प्रदान करने वाली मातृस्वरूपा महाप्रकृति ने निश्चय ही मानव प्रजाति की उच्छशृंखल होती जा रही प्रवृत्ति के सुधार हेतु यह निदान निश्चित किया है। जो कि भारतीय दर्शन के कर्म सिद्धांतों के अनुसार स्पष्ट है। आप देखिए कोरोना से उत्पन्न महामारी का कोई प्रभाव पशु पक्षियों पेड़ पौधों पर नहीं दिखता, बल्कि वे और स्वस्थ प्रतीत हो रहे हैं। आज जहां मनुष्य को अन्न वितरण करना पड़ रहा है वही गली में घूमने वाले कुत्तों और अन्य पशुओं मैं भूख के कारण कोई अराजकता दिखाई नहीं देती। नदियों का ,वायु का स्वच्छ व निर्मल हो जाना ,लुप्त प्रजाति के पशु पक्षियों का प्रकट होना जैसे अनेक परिदृश्य हमें प्रकृति द्वारा सकारात्मक संदेश दे रहे हैं। लेकिन मनुष्य पूर्ण बंदी के कारण होना बता कर पुनः अपनी मूर्खता का परिचय ही दे रहा है, यहां जापान का उदाहरण भी समीचीन होगा। जहां प्रशासनिक रूप से पूर्ण बंदी की गतिविधि ना होने के बावजूद स्थिति नियंत्रण में है क्योंकि पूर्व काल में ही त्रासदी से शिक्षा प्राप्त कर वहां का हर नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक है और आज यह अनिवार्य आवश्यकता है हर मानव प्रजाति की। पूर्ण बंदी प्रशासनिक दबाव नहीं बल्कि प्राकृतिक संकेत है। हमे पूर्ण बंदी करनी होगी मानसिक विलासिता की, कृत्रिम दिखावे और कृत्रिम विलासिता पर लगाई हमारी बौद्धिक पूर्ण बंदी वैमनस्यता से भरे विचारों से दूरी । इन्हें समझना होगा अपनाना होगा । तभी हम प्रकृति पर्यावरण व मानव सभ्यता को पुनः समृद्ध कर सकेंगे।

विशेष संवाददाता

विकास बनाम पर्यावरण भाग–2

पिछले अंक 'पर्यावरण बनाम विकास' में मैंने कहा था कि पर्यावरण और विकास दोनों को साथ लेकर चलना होगा तभी हम मानव अस्तित्व को बचा पाएंगे क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति अपने आप को संतुलित करने का प्रयास कर रही है वह भी बड़ी तेजी से।चाहे वह कोरोना महामारी हो, चक्रवाती तूफान या बार –बार आते भूकंप के झटके जो किसी बड़े भूकंप की आहट हैं या बढ़ती गर्मी से जंगलों में लगती आग जिसने मानव समाज को हिला कर रख दिया है। अगर हम अभी सचेत नहीं हुए तो हो सकता है कि मानव इतिहास की एक बड़ी त्रासदी के हम साक्षी हो।अब हमें विकास की एक ऐसी अवधारणा को विकसित करना है जिससे पर्यावरण मूल्यों की रक्षा के साथ मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके इसके लिए संपूर्ण मानव जाति को एक साथ विकास की उन योजनाओं का विरोध करना होगा जिसमे विकास कम और पूंजीपतियों और राजनेताओं की जेब ज्यादा भरती हो। जंगलो को काट मैदान बनाना और उस मैदान को धीरे–धीरे कंकरीट के जंगलों में तब्दील कर देना विकास नहीं हो सकता। नदियों के प्रवाह क्षेत्र को कम करके शहरों का विकास करना यह कैसा विकास है।पिछले 40 वर्षों में नदियों के प्रवाह क्षेत्र में शहरों का व्यापक विकास किया गया है जो भविष्य में एक बड़ी जल तबाही का रूप धारण कर सकता है। सबसे बड़ी चिंता की बात तो यह है कि सारे औ□गिक विकास मैदानी क्षेत्र में किए जा रहे हैं जो सामान्यतः कृषि योग्य भूमि है। बढ़ती जनसंख्या से इस कृषि योग्य भूमि के ऊपर दबाव बढ़ता जा रहा है ।अतः हमें औ□गिक शहरों का विकास पठार , पहाड़ों या उस भूमि पर करने की आवश्यकता है जो कृषि योग्य ना हो और जो पर्यावरण हितों को ज्यादा प्रभावित ना करें । सामान्यतः यह कहां जाता है कि पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए पृथ्वी पर 33ः प्रतिशत वन का होना आवश्यक है लेकिन भारत में तो लगभग 23.8 प्रतिशत क्षेत्र ही वनाछादित है ,जो पर्यावरण असंतुलन मौसम परिवर्तन के लिए जिम्मेदार है। अतः वनों का विनाश को रोकना होगा और अधिक से अधिक वनो का विकास करना होगा। हमें कृषि योग्य भूमि के 33 प्रतिशत क्षेत्र पर फलदार वृक्ष को लगाना होगा जिससे किसान अनाज के साथ–साथ फल का उत्पादन ही कर सके तथा उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकें। विकास के नाम पर स्थापित होने वाले बड़े–बड़े कारखाने व शहरों मे निजी व सरकारी भवन बनाये जाये चाहे वह रिहायशी हो या ऑफिस के रूप में हो उन सभी के छेत्रफल के 33 प्रतिशत क्षेत्र पर वृक्षों का लगाना अनिवार्य किया जाये। सरकारी व गैर सरकारी वह भूमि जिसका उपयोग कहीं नहीं किया गया उस पर तत्काल वृक्षारोपण भी किया। मंदिर ,मस्जिद चर्च, गुरुद्वारा व अन्य धार्मिक स्थानों की खाली पड़ी भूमि पर फलदार वृक्षारोपण किया जाये जिससे पूरे देश में व्यापक स्तर पर फलों का उत्पादन हो सके और पर्यावरण के साथ–साथ विकास को भी बढ़ावा मिल सके। सरकार को इस दिशा में अत्यंत ही कड़े कदम उठाने चाहिये।

कृषि के क्षेत्र में व्यापक स्तर पर रासायनिक दवाओं और उर्वरक का प्रयोग हो रहा है अत्यधिक उत्पादन पाने के लिए हम दिन ब दिन इन रसायन की मात्रा बहाते जा रहे मैंने यह देखा है और वैज्ञानिकों का मानना है कि जिन दवाओं का प्रयोग हम आज के 10– 20 साल पहले कर रहे थे उनका वर्तमान की फसलों पर प्रभाव कम हो गया है ।और जिन दवाओं का प्रयोग आज हम कर रहे हैं 10 साल बाद काम नहीं करेगी और हम भविष्य में एक ऐसे खतरे की ओर बढ़ रहे हैं जिस का निदान हो सकता है कि ना हो। अतः आवश्यकता है कि हम जैविक खेती को बढ़ावा दें कृषि योग्य भूमि को दूषित होने से बचा सके और पर्यावरण के साथ–साथ कृषि का स्वस्थ विकास हो सके ।और हम एक नवीन पर्यावरणीय फसल चक्र की स्थापना कर सकें। .अतः आज हमें इस बात पर ध्यान देना है कि भविष्य में जो विकास योजनाएं बने चाहे वह कृषि क्षेत्र में हो या शहरी विकास की क्षेत्र में या औ□गिक विकास की उनके मूल में पर्यावरण सुरक्षा मुख्य होनी चाहिए और यह योजनाएं पर्यावरणीय हितों के अनुकूल हो।

अभय सिंह

लोक गीत के माध्यम से कोरोना से मुक्ति हेतु प्रार्थना

धुन : लगन आई हरे–हरे

कोरोना फैल्यौ अरे अरे,
कोरोना फैल्यौ अरे अरे,
कोरोना फैल्यौ भारत में,
रघुनन्दन लेउ बचाइ।

#घर में कैद है गई जनता,
बेघर भए करोड़।
मौत झपट्टा मारि रई ऐ,
खून कूँ रई ऐ निचोड़।।

#इटली रोइ, फ्रांस हू रोए,
अमरीका, स्पेन।
रोइ रह्यौ यूरोप सपत्तौ,
चीन की है सब देन।।

#चीन नीच नैं जो दुःख दीन्यों,
भुगत रए सब कोइ।।
लाखन पीड़ित जने देखि कैं,
भारत माँ रई रोइ।।

#हे दुर्गे, अम्बिका, भवानी,
अब तौ सुन्यौं पुकार।
कोरोना की बीमारी सै,
सबइ लगाइ देउ पार।।

#मन्दिर हू सब बन्द परे हैं,
भक्त हैं सब बेहाल।
अपने आरत देस के अब तुम,
काटि देउ जंजाल।।

#नव सम्वत्सर जैसे सुभ दिन,
बन्द भयौ तव देस।
बिनवै 'रजक' तुमहिं रघुनन्दन
काटौ सकल कलेस।।

गीत रचयिता: डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक', मथुरा.

अ ती त से स ब क लेने वाला

न्यूजीलैंड बना – न्यू (नया) जी (जीवन देने वाला) लैंड (देश या राष्ट्र)1918 में दुनिया में कहर मचा देने वाले स्पेनिश फ्लू (इन्फ्लूएंजा) में जान गँवा देने वाले पाँच करोड़ से अधिक लोगों की मौत को प्रथम विश्व युद्ध के आगे भुला देने की मानव–समाज ने एक बड़ी गलती न की होती तो आज नोवल वायरस कोविड–19 जैसी महामारी से बचाव का कोई–न–कोई रास्ता अवश्य खोज लिया होता। उसी सन्दर्भ में प्रस्तुत है यह कुण्डली (छक्का)।

भूल चुका इतिहास
जो,दुनिया का हर लैंड।
याद रखा बस एक ने,
वह था न्यू जी लैं ड।।
वह था न्यू जी लैं ड,
लड़ गया को रो ना से।।
पैसे – भर भी हुआ
दुःखी नहिं को रो ना से।।
कहें 'र ज क' यदि याद
में होता स्पेनिश फ्लू।
मिल जाता बचाव का
कोई – ना – कोई क्लू।।

डॉ राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक'

समृद्ध भारत
जागृति

ॐ

श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

मानवीय मूल्यों पर आधारित अधिकार

भोज्य सामग्री मकान व धन के रूप में प्रचलित विभिन्न मुद्राओं से लेकर जमीन ,पानी ,आग, हवा और आकाश हमारी सृष्टि की अर्थव्यवस्था के अभिन्न अंग हैं इसका सुचारू रूप से संचालन मानव प्रजाति का दायित्व पूर्ण कर्तव्य है भली प्रकार से अपने इस कर्तव्य का पालन करने पर ही हम मानव सभ्यता को समृद्धि व विकासोन्मुख कर सकते हैं। लोक हितार्थ अर्थव्यवस्था के व्यापक मानकों का पालन करने के परिणाम स्वरूप ही गुप्त काल तक हमारा भारतवर्ष सोने की चिड़िया कहलाने का गौरव प्राप्त कर सका ।परंतु, कालांतर में आर्थिक समृद्धि को मात्र धन स्त्री और जमीनी प्रभुत्व के रूप में परिभाषित करने वाली संकुचित विचारधारा रखने वाली पैशाचिक प्रवृत्ति वाली सभ्यताओं ने हमारे भारतवर्ष पर आक्रमणों के दौर प्रारंभ कर, मानवता को परिभाषित करने वाली ,आचारित , करने वाली, हमारी संस्कृति ध्वस्त करना आरम्भ कर दिया। मानवीय मूल्यों को अपनी पैशाचिक वासनाओं की ज्वाला से झुलसाकर अपने आप को विजेता समझने वाले इन पिशाचों ने व्यक्तिगत शरीर प्रधान कुत्सित मनोवृतियों को संतुष्ट करने के लिए हमें जीवन की सुंदरता का बोध कराने वाली , हमारी सुख–सुविधा के साधन उपलब्ध कराने वाली, मातृ स्वरूपा प्रकृति को विकृत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। परिणाम कभी ना कभी तो सामने आना ही था। आज कोरोना की वजह से उत्पन्न महामारी की स्थिति सामने है। विश्व का हर वह देश जो धन की दृष्टि से तुलनात्मक रूप से संपन्न हो जाता है वह भूल जाता है कि संपन्नता से प्रकृति प्रदत्त संसाधनों से ही होती है। अपने आप को महाशक्ति घोषित करने में जुट जाता है। प्रकृति की सुंदर सिद्धांतों से प्रतिस्पर्धा कर अपनी क्षुद्र मानसिकता की इस दौड़ के कारण आज संपूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था पूरी तरह डमाडोल हो चुकी है। धन से लेकर जीवन तक अंधाधुंध तबाह हो रहे हैं। ऐसे विकट समय में हमारा भारत आज भी नेतृत्व के पहले पायदान पर खड़ा है। हमारी प्राचीन शिक्षा पद्धति रही है, धन तो फिर आ जाएगा ,स्वास्थ भी कुछ परिश्रम से ठीक होगा ही, परंतु चरित्र हानि होने पर माफी असंभव की सीमा तक कठिन है। परंतु फिर भी हमारी शिक्षा पद्धति में प्रकृति को मां की ममतामयी संज्ञा से विभूषित किया जाता है। अपने आप को महाशक्ति बनाने की प्रतियोगिता में भाग लेने वाले देशों को सचेत होना चाहिए। दुःख का विषय है कि नेपाल जो भारत के एक योगी की मानसिक शक्ति से उत्पन्न होने के कारण भारत का एक अभिन्न अंग है, वह दूसरों के बहकावे में आकर भ्रमित हो रहा है। उसे संयमितता चाहिए। यदि स्पष्ट कहा जाए तो दलाई लामा जैसे मानवता के पथ प्रदर्शक सिद्ध महायोगी का तिरस्कार करने का कुफल चीन को भोगना ही होगा। भारतीय दर्शन का वि□र्थी होने के नाते यह संदेश देना हमारा कर्तव्य है कि निजी वर्चस्व की दौड़ में लगे प्रतियोगी देश अब भी भारतीय दर्शन की उदात्त उपदेशों को अपनी कार्यप्रणाली में समावेशित करें। तभी वे मानवता के अर्थ को समझ सकेंगे। और तभी अपने देशवासियों के साथ समस्त विश्व व उस महाशक्ति के प्रति भी मानवीय मूल्यों के अनुसार संबंध बनाने में सक्षम हो सकेंगे। और तभी मानव सभ्यता में नया स्वर्णिम अध्याय शुरू हो सकेगा। समृद्धि के इस पथ पर भारत सदैव समस्त विश्व के साथ होगा।

विशेष संवाददाता

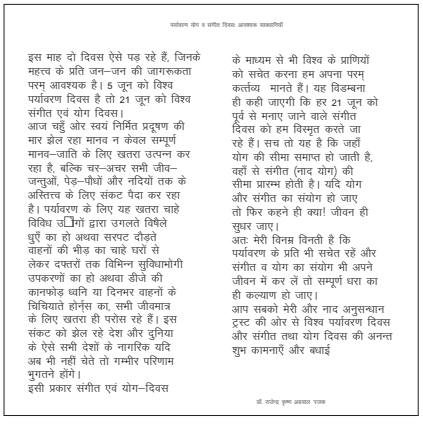

पर्यावरण योग व संगीत दिवसः आवश्यक सावधानियाँ

इस माह दो दिवस ऐसे पड़ रहे हैं, जिनके महत्त्व के प्रति जन–जन की जागरूकता परम् आवश्यक है। 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस है तो 21 जून को विश्व संगीत एवं योग दिवस।

आज चहुँ ओर स्वयं निर्मित प्रदूषण की मार झेल रहा मानव न केवल सम्पूर्ण मानव–जाति के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है, बल्कि चर–अचर सभी जीव–जन्तुओं, पेड़–पौधों और नदियों तक के अस्तित्त्व के लिए संकट पैदा कर रहा है। पर्यावरण के लिए यह खतरा चाहे विविध उ□गों द्वारा उगलते विषैले धुएँ का हो अथवा सरपट दौड़ते वाहनों की भीड़ का चाहे घरों से लेकर दफ्तरों तक विभिन्न सुविधाभोगी उपकरणों का हो अथवा डीजे की कानफोड़ ध्वनि या दिनभर वाहनों के चिचियाते होर्न्स का, सभी जीवमात्र के लिए खतरा ही परोस रहे हैं। इस संकट को झेल रहे देश और दुनिया के ऐसे सभी देशों के नागरिक यदि अब भी नहीं चेते तो गम्भीर परिणाम भुगतने होंगे।

इसी प्रकार संगीत एवं योग–दिवस के माध्यम से भी विश्व के प्राणियों को सचेत करना हम अपना परम् कर्त्तव्य मानते हैं। यह विडम्बना ही कही जाएगी कि हर 21 जून को पूर्व से मनाए जाने वाले संगीत दिवस को हम विस्मृत करते जा रहे हैं। सच तो यह है कि जहाँ योग की सीमा समाप्त हो जाती है, वहाँ से संगीत (नाद योग) की सीमा प्रारम्भ होती है। यदि योग और संगीत का संयोग हो जाए तो फिर कहने ही क्या! जीवन ही सुधर जाए।

अतः मेरी विनम्र विनती है कि पर्यावरण के प्रति भी सचेत रहें और संगीत व योग का संयोग भी अपने जीवन में कर लें तो सम्पूर्ण धरा का ही कल्याण हो जाए।

आप सबको मेरी और नाद अनुसन्धान ट्रस्ट की ओर से विश्व पर्यावरण दिवस और संगीत तथा योग दिवस की अनन्त शुभ कामनाएँ और बधाई

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक

समृद्ध भारत

नाद

ॐ
श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

श्रद्धांजलि

हार्दिक दुःख का विषय है कि हमारी संस्था मृगाश्री कैपिटल के प्रमुख निदेशक व नाद अनुसंधान ट्रस्ट के समर्पित सेवक श्री अरुण कुमार गोयल का दिनांक 14—06—2020 को लगभग 1बजे अकस्मात हृदय गति रुक जाने के कारण देहांत हो गया। हम सभी उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति सद्गति व समस्त शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करें। उनके दोनों पुत्र श्री अक्षय गोयल व श्री असीम गोयल के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए उनके साथ हो सहयोग का वचन देते हैं।

शोकाभिभूत
मृगा श्री कैपिटल
नाद अनुसंधान ट्रस्ट

ॐ
श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

नव निर्माण

वर्तमान में समस्त विश्व के साथ भारत की आर्थिक व्यवस्था में गिरावट आई है। मजदूर वर्ग अपने गृह क्षेत्रो में वापस आ चुके है। ऐसी परिस्थितियों में देश के प्रत्येक नागरिक कर्तव्य हो जाता है कि अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार जीवन की मूलभूत आवश्यकता की वस्तुओं का उत्पादन करना स्थानीय स्तर पर प्रारंभ करें। बड़ी मिलों व उ□गों श्रमिक वर्ग की सभी दिशा निर्देशों के पालन ऐसे उत्पादन पर पड़ने वाले फर्क को संतुलित करने हेतु देश व समाज की आवश्यकतानुसार हर प्रकार की उत्पाद सामग्रियों का स्थानीय स्तर पर गृह व कुटीर उ□गों के रूप में शुरू करना चहिए। नाद अनुसंधान ट्रस्ट द्वारा भी इस प्रकार की परियोजनाओं के संचालन की व्यवस्था की जा रही है। जिसमें जीवनी शक्ति वर्धक काढ़े व चूर्ण , कोकोकोला जैसे हानिकारक पेय के स्थान पर ऐसी खा□ सामग्री के उत्पादन के साथ शुद्ध सरसों का तेल, बेसन, सेंधा नमक इत्यादि के उत्पादन व अत्यंत कम मुनाफे पर विक्रय की सूचना पर हम कार्य कर रहे हैं। जिससे स्थानीय स्तर पर श्रमिक वर्ग को व महिलाओं को रोजगार मिल रहा है। इस कार्य को व्यापक स्तर पर करने हेतु आप सभी इच्छुक व्यक्तियों से निवेदन है कि अपने क्षेत्रों में समूह बनाकर व्यक्तिगत पूंजी निवेश कर इस प्रकार के लघु उ□गों की शुरुआत करें। निश्चय ही ऐसा करके हम व हमारा देश आत्मनिर्भर बनने की दिशा में सशक्त भूमिका अदा कर सकेगा। इस दिशा में योजना कार्यान्वित करने हेतु नाद अनुसंधान आप सबको सादर आमंत्रित करता है।

नाद अनुसंधान ट्रस्ट

ॐ
श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

कोरोना से रक्षार्थ

देश विदेश के सभी नागरिकों को हर्ष के साथ सूचित किया जा रहा है कि हमारी संस्था नादानुसंधान ट्रस्ट के शोधार्थियों ने कुशल आयुर्वेद वै□ के निर्देशन में विषाणु प्रतिरोधक क्षमता से युक्त जीवनी शक्ति वर्धक काढे व चूर्ण का योग फार्मूला तैयार कर लिया है ,जो निश्चय ही इस विषाणु से युद्ध में मानव प्रजाति की शत–प्रतिशत रक्षा हेतु समर्थ साबित होगा। आयुष मंत्रालय से हमारा निवेदन है हमारे द्वारा निर्मित योग का परीक्षण कर इसे जनसाधारण तक उपलब्ध कराने हेतु हमें अनुमति देने का कष्ट करें।

नाद अनुसंधान ट्रस्ट

गांधी जी का सङ्गीत–प्रेम और संगीतज्ञों का गांधी जी के प्रति प्रेम

लेखक– डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, 'रजक' संगीताचार्य, मथुरा

सुर और असुर अर्थात् देव और दानव का वैर अनादि काल से चलता चला आ रहा है। दरअसल ये दोनों ही वृत्तियाँ प्परस्पर इतनी विरोधी हैं कि कभी एक साथ रह ही नहीं सकतीं। जहाँ सुर है वहाँ असुरत्व या दानवीय वृत्ति प्रवेश कर ही नहीं सकती। क्योंकि सुर में जीव–मात्र के कल्याण की कामना होती है।फिर सङ्गीत तो एक ऐसी कला है, जिसकी सुर के बिना कल्पना करना भी सम्भव नहीं है। कोई कलाकार अपने गायन या वादन में जब स्वर भी बहुत सच्चे लगाने लगता है तो हम उसे 'स्वरीला' नहीं, 'सुरीला' कहकर सम्बोधित करते हैं। अर्थात् स्वर की उत्कृष्टता ही उसे सुर कहकर महिमामण्डित करती है। सङ्गीत का आधार ताल है। ताल पर ही सम्पूर्ण सङ्गीत – गायन, वादन, नृत्य–प्रतिष्ठित होता है। यथा –गीतं, वा□ तथा नृत्यं, यतस्ताले प्रतिष्ठिताम्। कहा तो यहाँ तक भी गया है कि–यतो तालं न जानाति, न च गायको न च वादकः। ताल का आधार लय है। और लय के अधीन तो ताल और सङ्गीत ही क्या, सारा जगत ही जो है। जैसे सुर का विलोम (विरोधी) असुर है, वैसे ही लय का प्रलय। इसीलिए सङ्गीत में बेसुरे से भी अधिक बुरा बेताला होना माना गया है। जहाँ सङ्गीत है, वहाँ सम है और सम के साथ विषमता कभी भी नहीं रहेगी। यही कारण है कि सङ्गीत में जन–जन को जोड़ने की शक्ति निहित होती है। सङ्गीत के स्वर मानव को जोड़ने वाले मन्त्र हैं, तोड़ने वाले नहीं। इनमें राग है, अनुराग है, पर द्वेष नहीं। समता की भावना है, निर्ममता की नहीं। सम के चूकते ही विषमता और नीरसता आनी अवश्यम्भावी है। फिर खूब और बहुत खूब कहने के बजाय ऊबने और बहुत ऊबने लग जाते हैं हम लोग। यह कला पल–प्रतिपल जागरूक बनाए रखती है हमें। यह हम में प्रत्युत्पन्नमति की क्षमता प्रदान करती है। यही कारण है कि सभी कलाओं में सङ्गीत न केवल श्रेष्ठ है, बल्कि सर्वश्रेष्ठ है।महात्मा गांधी का भी सङ्गीत के प्रति यही दृष्टिकोण था, जिसके कारण उन्होंने स्कूली शिक्षा के लिए सर्वाधिक आवश्यक विषय के रूप में केवल और केवल सङ्गीत को ही अनिवार्यतः रखने की वकालत की। उन्होंने तत्कालीन विषम परिस्थितियों में भी राष्ट्र–प्रेम और देश–भक्ति की बात नहीं की। उन्होंने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति जॉन केनेडी की भाँति यह नहीं कहा कि– Ask, not what your Country can do for you. Ask, what you can do for your country उनकी दूरदृष्टि तो देखिए। उन्होंने सङ्गीत पर इसलिए बल दिया कि वे जानते थे कि यदि इन बच्चों के माध्यम से भारत के घर–घर में सङ्गीत पहुँच गया तो शान्ति की स्थापना तो चहुँ ओर खुद–ब–खुद हो जाएगी। आतंक और खून–खराबा जैसी सोच के लिए सङ्गीत में तो स्थान ही नहीं है। सङ्गीत भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। दुनिया के प्राचीनतम ग्रन्थ हमारे वेद सङ्गीत से विलग कहाँ हैं? मेरा अपना मानना है कि संस्कृति को बचाए रखकर ही सम्पूर्णता की ओर अग्रसर हुआ जा सकता है। वैश्विक एकीकरण सिर्फ और सिर्फ सङ्गीत के द्वारा ही सम्भव है। यदि भारत के घर–घर में सङ्गीत पहुँच गया तो फिर भारत भाव, राग और ताल में रत भारत जो बन जाएगा और फिर ऐसे भारत में महाभारत का क्या काम ?भारत में शान्ति की स्थापना का अर्थ है विश्व–शान्ति के लिए स्वयं पथ प्रशस्त हो जाना, क्योंकि भारतीय चिन्तन 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना के साथ 'विश्व का कल्याण हो' की कामना करता है। गांधी जी का मानना था कि–"कला जीवन में सबसे बड़ी तपस्या है।"वे यह भी मानते थे कि–जिसने उत्तम जीवन जीना हो, वही कलाकार है।"गांधी जी ने कला को मात्र प्रदर्शन और मनोरंजन की वस्तु कभी नहीं माना। वे कहते थे कि–"जो कला आत्म–दर्शन की प्रेरणा नहीं देती, वह कला नहीं है।" श्रीमद्भगवद्गीता केवल कोई गेय श्लोकों का संग्रह–मात्र नहीं है,वह उत्तम जीवन जीने की शिक्षा प्रदान कराने वाला और आत्म–दर्शन की प्रेरणा देने वाला दुनिया के सभी धर्मों का सर्वाधिक श्रेष्ठ ग्रन्थ है। यही कारण है कि गांधी जी ने गीता के वैश्विक महत्त्व को उजागर करते हुए कहा कि–"गीता विश्व–धर्म की एक पुस्तक है।"गांधी जी का कहना था कि–"भारतीय कलाकारों ने अपनी कला को मन्दिरों और गुफाओं में व्यक्त कर सार्वजनिक कर दिया है।"सच में भारतीय संगीतज्ञ गायक हों या वादक अथवा नर्तक, इन सभी ने मन्दिरों और देवस्थानों इत्यादि के माध्यम से यदि सङ्गीत कला को जीवित नहीं रखा होता तो आज हम उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। और संगीतज्ञ ही क्यों, यहाँ वे मूर्तिकारों और चित्रकारों ने भी मन्दिरों और गुफाओं में अपनी कला की अभिव्यक्ति नहीं की होती, तो आज उनकी वह कला भी काल के गाल में समा चुकी होती। दरअसल केवल कला में ही हमारी सुप्त भावनाओं को जागृत करने की अद्भुत क्षमता होती है।आज उन ज्ञात–अज्ञात कलाकारों द्वारा छोड़ी गई धरोहर ही अनगिनत कला–पिपासुओं और जिज्ञासुओं का मार्गदर्शन कर कलाओं के विकास में योगदान दे रही है।गांधीजी का सङ्गीत के प्रति जो अनन्य प्रेम और लगाव रहा, उसी के परिणामस्वरूप उनमें सभी धर्मों के प्रति समान आदर की भावना थी। उनकी प्रार्थना में सभी धर्मों के गीतों का समावेश रहता था।सच पूछा जाए तो हम कलाकार लोगों को न तो कभी कोई धर्म बाँट पाया और न ही कोई जाति। कलाकार का सिर्फ कला की साधना में रत रहना ही एकमेव धर्म होता है। आज भी विभिन्न धर्मावलंबी कलाकारों को एक ही मंच पर, एक–दूसरे की संगति में प्राणपण से जुटे हुए देखकर कोई भी साधारण से साधारण व्यक्ति भी यह अनुमान लगा सकता है कि सङ्गीत में जैसी वैश्विक एकीकरण की भावना देखने को मिलती है, वैसी अन्यत्र कहीं भी नहीं।आज जिस प्रकार हमारे राज और समाज में अराजकता और अनैतिकता का वातावरण बना हुआ है, स्वाधीनता से पहले ऐसा नहीं था। पहले राजनीति के अपने आदर्श होते थे, मर्यादाएँ होती थीं, जबकि आज राजनीति में लोभी, लम्पट, लालची, लुच्चे, लंठ और लबारों ने जिस कदर घुसपैठ कर ली है, उससे सीधे–सच्चे लोग इसे अपनाने से भी डरने लगे हैं।सङ्गीत को लेकर गांधी जी के जीवन की कुछ घटनाओं का यहाँ उल्लेख करना बहुत आवश्यक है।गांधी जी ने जब 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जन्मे किराना घराना के अप्रतिम गायक उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब का गायन सुना तो वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने कहा कि यदि मेरा वश चले तो मैं उस्ताद को हर गाँव में ले जाकर सुनवाऊँ, ताकि लोग जान सकें की हमारे यहाँ का सङ्गीत कितना श्रेष्ठ है। जो लोग उस्ताद अब्दुल करीम खाँ साहब के नाम से अपरिचित हैं, उन्हें मैं यह भी बता देना चाहता हूँ कि उनका पालतू कुत्ता भी उन्हें सुन–सुनकर इतना सुरीला हो गया था कि वह भी सुर में सुर मिला लेता था। रिकॉर्ड कम्पनी हिज मास्टर्स वॉयस ने इसी से प्रभावित होकर उनके पालतू कुत्ते को ही अपनी कम्पनी के लोगो के लिए चुन लिया। गांधी जी के नेतृत्त्व में अमृतसर में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में तीन प्रमुख शास्त्रीय संगीतज्ञ आमन्त्रित किए गए– भास्कर बुवा बखले, जगन्नाथ बुवा पुरोहित और कृष्ण राव शंकर पण्डित। पहले इन तीनों गायकों को अलग–अलग गाना था, किन्तु समयाभाव के कारण तीनों ने ही एकसाथ मिलकर गाया। गांधी जी के अत्यन्त प्रिय दोनों भजनों– 'रघुपति राघव राजा राम' और 'वैष्णव जन तो तेने कहिए' की धुनें उस समय के प्रख्यात् संगीतज्ञ पण्डित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जैसे श्रेष्ठ सङ्गीत–ऋषि द्वारा बनाई गई थीं। इसी प्रकार कर्नाटक संगीत की सर्वश्रेष्ठ गायिका भारत–रत्न एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी का गायन गांधी जी को अत्यन्त प्रिय था। सुब्बुलक्ष्मी जी को भी सम्भवतया भजन गायन की प्रेरणा गांधी जी से ही मिली। महात्मा गांधी की प्रार्थना–सभा में भी भजन –गायन आदि भक्ति–सङ्गीत का समवेत स्वरों में गायन होता था। उनको सामूहिक गायन ही अधिक प्रिय था। भारतवर्ष के एकाध ही नहीं, अनेकानेक मूर्धन्य कलाकार उनके मुरीद थे। यहाँ हम एक ऐसी ही असाधारण घटना का जिक्र कर रहे हैं। घटना इस प्रकार है–आज से 50 वर्ष पूर्व गांधी जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रख्यात् शास्त्रीय गायक पण्डित कुमार गन्धर्व ने एक राग बनाया। उनके द्वारा राग का नाम गांधी मल्हार रखा गया। पण्डित गन्धर्व जी ने गांधी जी को भारत छोड़ो आंदोलन के समय पहली बार बम्बई (अब मुम्बई) के गवालिया टैंक मैदान में आयोजित जन–सभा में देखा था। उस समय गन्धर्व जी को उनके गुरु प्रो. देवधर जी ने कुछ छात्रों के साथ भजन–गायन हेतु भेजा था। गांधी–दर्शन से बेहद प्रभावित पण्डित गन्धर्व ने स्वनिर्मित इस राग में गांधी जी के अभय, करुणा और एकाकीपन पर ही ध्यान केन्द्रित किया। उन्होंने इस राग में विलम्बित व द्रुत लय में एक–एक रचना का निर्माण किया, जो खड़ी बोली में हैं। पण्डित जी ने उनको 'संजीवन', 'आलोक', 'आहत और आरत के सखा' तथा 'दर्शन का अनुगामी' भी कहा है। पण्डित जी ने इस राग की प्रस्तुति प्रथम बार विज्ञान भवन में गांधी जी की पुण्य–तिथि 30 जनवरी 1970 को की थी। उस समय उन्होंने कबीर दास का भी एक पद गाया था– 'हिरना समझ–बूझ बन चरना।' रजा फाउंडेशन की सीरीज 'गांधी मैटर्स' में पण्डित जी की यशस्वी सुपुत्री कलापिनी कोमकली जी भी इस राग की पृष्ठ–भूमि पर प्रकाश डालते हुए इसकी सशक्त प्रस्तुति दे चुकी हैं।ये चंद घटनाएँ ऐसी हैं, जो गांधी जी के प्रति मूर्धन्य संगीतज्ञों के प्रेम को भी दर्शाती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि जहाँ गांधी जी का सङ्गीत के प्रति अगाध प्रेम था, वहीं संगीतज्ञ भी उनसे कम प्रेम नहीं करते थे।

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल 'रजक', मथुरा(उ.प्र.)

समृद्ध भारत
समृद्धि

An investor education and awareness initiative in association with Mrigaashree Capital (P) Ltd.

Dear Reader,
It gives us immense pleasure to introduce the Learning Series in association with Mrigaashree Capital (P) Ltd. This is An investor education and awareness initiative and we will try and simplify financial terminologies and concepts.
We hope you enjoy this series & look forward to your feedback on mrigaashree.capital@gmail.com or naad.anusandhan@gmail.com

Happy Investing!

All investments are not equally important. Basic investment needs must be fulfilled before others
If we put our saved money where it will grow, then that's investing.
However, there are a number of possibilities available when we want to invest and it is not possible to make choices without having a way to classify things.
Let us not jump into classifying investments right away. Before we do that, we need to classify our need for making an investment.
Investments can be made for a huge variety of needs. You could be saving for emergency medical funds which are usually required at a moment's notice. Or you could be saving for your retirement which is a few decades away, or anything in between.
We have created a useful framework for thinking about these investment needs by diving them into four levels. Each level is more fundamental than the ones that come after it. You should satisfy the need at each level before going on to the next one.

Those who know a bit about psychology may recognise this system as being based on the 'Hierarchy of Needs', a concept proposed by psychologist Abraham Maslow. Maslow's hierarchy dealt with basic human needs like food, shelter, etc. In the same way, human beings deal with their higher needs after simpler ones are satisfied. Here is the Hierarchy of Investing Needs:

LEVEL 1 - Basic contingency funds: This is the money that you may need to handle a personal emergency. It should be available instantly, partly as physical cash and partly as funds that can be immediately withdrawn from a bank. Online banking and ATMs make it relatively simple to get this organised.

LEVEL 2 - Term Insurance: Calculate a realistic amount which allows your dependents to finance at least short- and medium-term life goals if you were to be struck with a debilitating injury or disease or even face untimely death. You should have an adequate term insurance before you think of any savings.

LEVEL 3 - Savings for foreseeable short-term goals: This is the money needed for expenses that you plan to make within the next two to three years. Almost all of this should be in minimal risk avenues.

LEVEL 4 - Savings for long-term foreseeable goals: Same as level 3, except the planned expenses are more than three to five years away. This level could be invested in equity and equity-backed investments.However, this does not decide how much to invest towards each need. This system aims at preventing you from going to a higher level unless the lower one is fulfilled. If you have not put emergency cash in a savings account, then do not buy term insurance. If you do not have term insurance, then do not start putting away money for your daughter's collegeeducation, and so on.

SUMMARY
There are a huge variety of investments available which anyone can use. To choose the correct type of investment, we need to understand the different types of needs that an investment0 fulfils. We have divided investment needs into different levels, which helps you classify them. These levels go from basic needs, such as emergency cash, all the way up to long-term investments.

Source:- www.franklintempletonindia.com

Mrigaaश्री
MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

समृद्ध भारत ऊर्जा

धोनी ने खरीदा 8 लाख का ट्रैक्टर मकसद क्या ?

क्रिकेट

लॉकडाउन में 'किसान' बने MS Dhoni; खरीदा 8 लाख का ट्रैक्टर, सीख रहे जैविक खेती के गुर

टीम इंडिया के पूर्व कप्तान और स्टार क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धोनी का हाल में एक वीडियो चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के आधिकारिक ट्विटर अकाउंट से शेयर किया गया जिसमें वह ट्रैक्टर चलाते हुए नजर आ रहे हैं। असल में थोड़ी दे यह ट्रैक्टर खरीदा है और इसके पीछे खास वजह भी है योनि को बाइक और कार से काफी प्यार है रांची में उनके फार्महाउस में बाइक और कार के लिए अलग से गैरेज भी है।अब धोनी की गाड़ी के कलेक्शन में एक ट्रैक्टर भी शामिल हो गया है ।धोनी ने ऑर्गेनिक फार्मिंग के लिए यह ट्रैक्टर खरीदा है ।महिंद्रा स्वराज ᭭᭭ ट्रैक्टर सुर्ख लाल रंग का है और फार्म हाउस में ऑर्गेनिक फार्मिंग के लिए ट्रैक्टर खरीदा है। ट्रैक्टर की कीमत7.90 लाख से 8.40 लाख रुपए के बीच है । कोविड–19 बीमारी के चलते दुनिया के ज्यादातर देशों में लॉकडाउन है। इस समय क्रिकेटर्स भी अपने परिवार के साथ घरों में ही हैं। दुनिया के तमाम बिग्गाजी क्रिकेटर इस समय सोशल मीडिया के जरिए फैंस से जुड़े हुए हैं और लाइव इंस्टाग्राम चौट पर आ जाते हैं। इस दौरान दूरी सोशल मीडिया से बहुत दूर है। उनकी पत्नी साक्षी धोनी उनके इंस्टाग्रामअकाउंट से मिलती रहती है। धोनी ने पिछले साल जुलाई के बाद क्रिकेट नहीं खेला है। धोनी 2019 वर्ल्ड कप के बाद से क्रिकेट से ब्रेक पर चल रहे हैं। आईपीएल के साथ उदय क्रिकेट के मैदान पर वापसी कर रही थी ,लेकिन कोविड–19 महामारी के कारण आईपीएल को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया है।

सभ्यता सिंह

सेशल मीडिया पर कमाई करने वाले नंबर 1 भारतीय बने कोहली

कोरोना महामारी के दौरान सोशल मीडिया को बनाया अपनी कमाई का जरिया। लव डाउन के कारण दुनिया के बहुत से लोगों को अपनी आजीविका से हाथ धोना पड़ा हो या उनकी आमदनी कम हो गई हो लेकिन इस दौरान भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान विराट कोहली ने इंस्टाग्राम पर मात्र तीन स्पॉन्सर्ड पोस्ट के जरिए 3 लाख 79 हजार294 पोंड (करीब 3.6 करोड़ रुपए) कमाए हैं। ब्रिटिश वेबसाइट मिरर की खबर के अनुसार विराट कोहली लॉक डाउन के दौरान इस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से कमाई करने वाले टॉप 10 खिलाड़ियों में शामिल इकलौते भारतीय और क्रिकेटर हैं। इंस्टाग्राम से कमाई करने में विराट कोहली नंबर वन भारतीय बन गए हैं उन्होंने पिछले 12 महीनों में इंस्टाग्राम ग्राम पर 56 पोस्ट के जरिए 13 मिलियन पाउंड (लगभग 124 करोड़) कमाए हैं। पिछली बार इस सूची में प्रियंका चोपड़ा नंबर वन भारतीय थी। पिछली बार इस सूची में प्रियंका चोपड़ा नंबर वन भारतीय थीं। 'द सन' ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि विराट कोहली इंस्टाग्राम से कमाई करने वाले सिलेब्रिटीज में दुनिया में पांचवें नंबर पर है।

संस्कृति सिंह

सुशांत सिंह राजपूत की आत्महत्या या रहस्य ?

बॉलीवुड के धोनी यानी सुशांत सिंह राजपूत ने मुंबई के बांद्रा स्थित अपने घर में फांसी लगाकर सुसाइड कर ली। अभी तक उनके इस फैसले के बारे में कुछ पता नहीं चल पाया है। अभी तक की प्राप्त जानकारियों से यह ज्ञात हुआ है कि वह बीते 6 महीने से डिप्रेशन में थे। इस वजह से दवाइयां ले रहे थे। यह आशंका जताइ जा रही है कि अपने फिल्मी करियर मे उतार चढाव के कारण वो डिप्रैस्ड थे।

मुंबई में स्थित उनके घर पर पुलिस जांच पड़ताल कर रही है। कुछ समय पहले सुशांत की मैनेजर दिशा सालियान की भी इमारत से गिरने से मौत हो गई थी। सुशांत सिंह का जन्म पटना में हुआ था। सुशांत बॉलीवुड के बेहद ही लोकप्रिय एक्टर थे। उन्होंने अपने करियर की शुरुआत टीवी एक्टर के तौर पर की थी। उन्होंने अपना कैरियर टीवी इंडस्ट्री से शुरू कर बॉलीवुड में अच्छी पहुंच बनाई थी। एकता कपूर के सीरियल पवित्र रिश्ता ने उन्हें घर–घर में पहचान दिलाई।बॉलीवुड को एम एस धोनी, काय पो छे ,शुद्ध देसी रोमांस, केदारनाथ जैसी बेहतरीन फिल्में दी हैं। फिल्म व खेल जगत के लगभग सभी प्रसिद्ध सितारों ने उनकी मृत्यु पर संवेदना प्रकट की है प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने ट्वीट किया है और अपनी संवेदना व्यक्त की है। घर में उनके सहायक ने पुलिस को सुसाइड की खबर दी। पुलिस के मुताबिक शुरुआत में फांसी लगाने की कोई वजह नहीं पता चल पा रही है। पुलिस जांच में जुटी हुई है। सुशांत सिंह आखरी बार ड्राइव पिक्चर में नजर आए थे। कम समय में सफलता की ऊंचाइयां चढ़ने के बावजूद उनके इस आत्मघाती फैसले से सभी स्तब्ध हैं ।पुलिस हर एंगल से घटनाक्रम की जांच करने में जुटी है।

संवाद सूत्र

मजबूर मजदूर

मजबूर हूँ हाँ मै मजदूर हूँ.
करोना से बच जाऊँगा मगर शायद भूक से मर जाऊँगा
घर छोड़ा था जिसके के लिए
अब उसके लिये आपके शहर नहीं आऊँगा
हाँ मै मजदूर हूँ ...
शायद मै भूक से मर जाऊँगा
तुम मेरी मजबूरी पर सियासत करो
मै तुम्हारी इस सियासत की कीमत चुकाऊँगा
मै शायद भूक से मर जाऊँगा
ये मेरा भी मुल्कध है– मगर आपकी राजनीति को कैसे समझाऊँगा
मै ....
ये मासूम बच्चा ये मजबूर माँ
ये पैरो के छालें किस किस को दिखाऊँगा
शायद...
हाँ मै मजदूर हूँ। हाँ मै मजबूर हूँ

कलम से : सी. एल. गुप्ता

हाँ मै खाकी हूँ

जब न्याय दिलाना हो तो सबसे पहले मै आती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ
जब झगड़ो तुम और मै समझाने आती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ
जब बढ़ जाए नफरतें उन्हें मै ही मिटाती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ
मै ही ले जाती हूँ घर से मै ही घर पर पहुँचाती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ
तुम्हारी खुुशियों में अपनी खुशी भूल जाती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ
तुम कानून को तोड़ो तो मै ही तुम्हें इसका पालन समझाती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ
कभी सख्त तो कभी फूल देकर समझाती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ
जो तुम (इंसान) वही तो मै हूँ बस तुम्हारी सीमाएँ समझाती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ
वो तुम्हें मौत बाँट रहा है मै उसी कोरोना से तुम्हें बचाती हूँ
हाँ मै खाकी हूँ

कलम से : सी. एल. गुप्ता

समृद्ध भारत
वसुंधरा

क्या तीसरा विश्व युद्ध होगा?

चीन द्वारा निर्मित कोरोनावायरस के इंसानों में फैलने के संबंध में ताइवान ने विश्व स्वास्थ्य संगठन को दिसंबर में ही जानकारी दी थी। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ताइवान के स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा दिए गए ईमेल को नजरअंदाज तो किया ही साथ ही इसके संबंध में गलत और भ्रामक जानकारियां दी। जनवरी और फरवरी में विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ऐसे दावे किए जो गलत या भ्रामक हो वायरस दुनिया भर में फैल रहा था। इसके बावजूद विश्व स्वास्थ्य संगठन ने निर्णायक फ़ेसला लेने में काफी देर की जिसका परिणाम यह हुआ कि विश्व में 400000 से ज्यादा लोग अभी तक मौत के शिकार हो गए और यह संख्या निरंतर तेज गति से बढ़ती जा रही है। अमेरिका शुरुआत से ही चीन और विश्व स्वास्थ्य संगठन से सवाल कर रहा है इस महामारी से निपटने में चूक क्यों हुई? अमेरिकी राष्ट्रपति ने विश्व स्वास्थ्य संगठन पर यह आरोप भी लगाया कि उसने चीन को लेकर पक्षपात किया उन्होंने यह भी कहा था कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने ही इसे बवंडर बना दिया और अमेरिका को गलत सलाह भी दी। अमेरिका के विदेश मंत्री माइक पॉम्पियो ने भी कहा था कि चीन नहीं चाहता था कि दुनिया को इस वायरस के बारे में पता चले और विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसका साथ दिया। चीन द्वारा जारी टाइमलाइन के मुताबिक समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने रिपोर्ट दी थी कि दिसंबर के अंत में वुहान सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) ने चीन के हुबेई प्रांत में अज्ञात कारण से निमोनिया के मामले पाए थे। 20 दिसंबर को म्युनिसिपल हेल्थ कमीशन ने अपने नियंत्रण के अधीन आने वाले अस्पतालों को इस अज्ञात कारण से हो रहे निमोनिया के सतर्कता से इलाज करने के निर्देश जारी किए थे। एक तरफ तो चीन ने इस वैश्विक महामारी को जन्म दिया दूसरी तरफ अपने विस्तार वाली नीति का पालन करते हुए हांगकांग और ताइवान पर अपना कब्जा करना चाहता है। इसके अतिरिक्त भारत में एलएसी पर भी चीन बराबर घुसपैठ की कोशिश करता रहता है कभी लद्दाख में कभी अरुणाचल प्रदेश तो कभी सिक्किम सारांश यह है कि भारत को भी लगातार अपनी विस्तार वादी नीति मे जकड़ना चाहता है। सन 1995 में इंडिया ताइपे एसोसिएशन का गठन हुआ और ताइवान के साथ भारत के व्यापार ने रफ्तार पकड़ी। 2 वर्ष पहले भारत और ताइवान के बीच कारोबारी करार हुआ जिससे व्यापार बढ़कर 6 अरब तक पहुंच गया भारत में ताइवान के राजदूत भी हैं चीन इससे चिढ़ा हुआ है। भारत और ताइवान के व्यापारिक समझौते के संबंध में चीन के सरकारी मीडिया ग्लोबल टाइम्स 25 दिसंबर 2017 में लिखा है कि भारत ताइवान के मामले में आग से खेल रहा है। ग्लोबल टाइम्स ने इस समझौते पर भारतीय राजनयिकों की टिप्पणियों का हवाला देते हुए भारत की तीखी आलोचना की है। ग्लोबल टाइम्स ने लिखा है, ' भारत के स्कॉलर्स ने इसे दोनों पक्षों के बीच जरूरी राजनीतिक और रणनीतिक संबंध करार दिया है।' ग्लोबल टाइम्स ने लिखा है, '' हालांकि ताइवान का सवाल कोई सरकारी स्तर का मुद्दा नहीं है। कुछ भारतीय लगातार मोदी सरकार को सलाह दे रहे हैं कि वह ताइवान कार्ड का इस्तेमाल करें और वन चाइना पॉलिसी के मामले में चीन से फायदा उठाएं। यह समझ आर्थिक मसलों से आगे की है और भारत–चीन संबंधों के लिए खतरनाक साबित हो सकती हैं। 'दरअसल ताइवान कार्ड को खेलते हुए भारतीय भूल जाते हैं कि वह खुद कई संवेदनशील मुद्दों से जूझ रहे हैं भारत को यह ख्याल रखना चाहिए कि वन चाइना पॉलिसी की लकीर को वह पार कर इसका वह नहीं कर सकते।' 8 मई 2019 ताइवान भारत के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों में सुधार चाहता है ,वह चाहता है कि भारत के जैसे संबंध चीन से हैं ,वैसे ही ताइवान से भी हों। तालिबान के वरिष्ठ अधिकारी ने यह जानकारी दी। भारत में ताइपे आर्थिक और सांस्कृतिक केंद्र टीईसीसी के प्रतिनिधि एंबेस्डर चुंग क्वांग तिन ने कहा–'' हमें इस बात पर कोई आपत्ति नहीं है कि भारत दुनिया में किस से दोस्ती करता है लेकिन ऐसा ताइवान के साथ संबंधों को ताक पर रखकर नहीं होना चाहिए। हम इस पर दृढ़ है और भारत सरकार से आग्रह करते हैं।'' चीन ने पनडुब्बी बनाने के लिए ताइवान को तकनीक के हस्तांतरण करने को लेकर भारत अमेरिका समेत 6 देशों को चेतावनी दी है। चीन ने कहा है कि पनडुब्बी निर्माण के लिए ताइवान की मदद करने के कदम से इन देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को आघात पहुंच सकता है। ताइवान को पनडुब्बी निर्माण के लिए प्रस्तावित डिजाइन सपने वाली अमेरिका ,जापान और यूरोपीय संघ की छह कंपनियों में कथित तौर पर भारत की भी एक कंपनी शामिल है। चीन बुरी तरह लगाया हुआ है कोरोना वायरस फैलाने के लिए पूरी दुनिया उसे जिम्मेदार मान रही है लेकिन वह भारतीय सीमा पर जमावड़ा बना रहा है उसके परिणामस्वरूप भारत में भी अपनी सेना की मौजूदगी में वृद्धि की है। भारतीय सीमा पर चीन की बढती आक्रामकता के पांच प्रमुख कारण है चीन की बौखलाहट का पहला कारण भारत का पीओके पर बढ़ता दबाव। सीमा पर भारत का सड़क निर्माण, लद्दाख के प्राकृतिक संसाधनों पर नजर, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के लिए नाक का सवाल, अंतरराष्ट्रीय कंपनियों का चीज छोड़ कर जाना। एलओसी पर तनाव को लेकर भारत चीन के मिलिट्री कमांडरों के बीच बातचीत हुई है। उम्मीद जताई जा रही है कि दोनों देशों के बीच काफी दिनों से जारी तनाव कम होगा। सेना ने बयान जारी किया है कि चीन के साथ सीमा विवाद सुलझाने की कोशिश जारी है। सेना ने कहा कि भारत और चीन के अधिकारी सैन्य और कूटनीतिक चौनल के द्वारा भारत –चीन बॉर्डर पर पैदा तनाव को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं। शेरा दे वीडियो से अपील की है कि इस घटनाक्रम को लेकर बिना आधार के और किसी भी तरह की टिप्पणी ना करें। दूसरी ओर ताईवान बॉर्डर पर चीन और अमेरिका के बीच भी तरह बढ़ता जा रहा है जहां साउथ चाइना सी में चीन 7 दिनों का सेना अभ्यास कर रहा है वहीं अमेरिका ने अपने डिस्ट्रॉय युद्धपोत को ताइवान की सीमा पर नियुक्त कर दिया है। उधर हांगकांग के मुद्दे को भी अमेरिका यूनाइटेड नेशन में उछालने वाला है इस घटनाक्रम का विश्व के ऊपर क्या प्रभाव पड़ेगा यह भविष्य ही तय करेगा क्या तृतीय विश्व युद्ध छिड़ जाएगा?

तरुण सिंह

स्वामी मुद्रक प्रकाशक–नाद अनुसंधान ट्रस्ट
प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकी सहयोग– सभ्यता सिंह
संपादकीय विभाग–
संपादक–तरुण सिंह
सह–संपादक– अभय प्रताप सिंह, संस्कृति सिंह
विशेष संवाददाता– तनुज कुमार

चीनी महात्वाकांक्षा सुपरपावर बनने की चाहत

कोरोना वायरस के द्वारा चीन विश्व की महाशक्ति बनना चाहता है ।अपनी उच्च महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए संपूर्ण विश्व को महामारी के मुंह में झोंकने वाला चीन संदेश का पहला शिकार बना ।चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने की सड़क में अपने देश की जनता की कभी परवाह नहीं की। जिसके कारण आज कोरोना वायरस पूरे विश्व में तबाही का तांडव मचा रहा है। कुछ विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि हांगकांग के विद्रोह को जब अपने तमाम अत्याचारों के बाद भी समाप्त ना कर सका तो सर्वप्रथम इस वायरस के द्वारा हांगकांग के विद्रोह को समाप्त करने हेतु वूहान की लाइफ में इसके निर्माण की प्रक्रिया अत्यंत गुप्त रूप से प्रारंभ की गई। परंतु, अमेरिकी खुफिया विभाग को इसके संबंध में जानकारी प्राप्त हो गई तथा लैब के शोधकर्ता द्वारा किसी वैज्ञानिक को रुपए का लालच देकर इस फार्मूले को प्राप्त करने की संपूर्ण योजना बन गई डील के अनुसार वायरस और उसे बनाने के फार्मूले के साथ अमेरिकी एजेंट और शोधकर्ता के बीच में संपर्क के संबंध में चीनी गुप्तचर विभाग को पता चल गया और चीनी गुप्तचर विभाग की कार्यवाही के दौरान शूटआउट में उस वैज्ञानिक की तो मौत हुई थी साथ ही अफरातफरी में वायरस भी मुक्त हो गया और सर्वप्रथम वायरस के कहर से वहान में तहलका मच गया ।चीन में मीडिया पूरी तरह से प्रतिबंधित है इस कारणवश इससे संबंधित कोई भी समाचार तत्काल दुनिया को ज्ञात नहीं हो सका। चीन से ईरान इटली आदि देशों से फैलते हुए इस वायरस ने पूरी दुनिया को अपनी गिरफ्त में ले लिया मौत और संक्रमण की दर के अनुसार अमेरिका पहले सीान पर तथा ब्राजील दूसरे स्थान पर है अमेरिका में तो मौत का आंकड़ा एक लाख को पार कर चुका है और प्रतिदिन लगभग 1000 लोग मौत के मुंह में जा रहे हैं। हर 24 घंटे के हिसाब से मृत्यु और संक्रमण का आंकड़ा लगातार बढ़ता जा रहा है। पूरे विश्व में चार लाख के करीब लोग अभी तक मृत्यु के मुंह में समा चुके हैं। भारत में भी लोग डाउन में दी गई रियायत ओं के बाद अन्य राज्यों से आ रहे मजदूरों की वापसी के दौरान संक्रमण का दायरा भयंकर रूप से बढ़ता जा रहा है। हां, यहां ठीक होने वाले मरीजों का भी लगभग 50: रिकवरी रेट है। चीन की साम्राज्यवादी दूषित मानसिकता और अमेरिका की वायरस के फार्मूला प्राप्त करने की चाहत में विश्व को ऐसे गंभीर संकट में डाल दिया है जिसका पूर्णता निराकरण अभी तक दुनिया को प्राप्त नहीं हुआ है मात्र सोशल डिस्टेंसिंग मास्क द्वारा नाक मुंह को ढक कर रखना और स्वच्छता आदि विशेषज्ञ डॉक्टरों व वैज्ञानिकों द्वारा बताए जा रहे हैं निर्देशों के अतिरिक्त कोई समाधान नहीं दिखता विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी अजीब सा रवैया अपना रखा है अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने विश्व स्वास्थ्य संगठन से नाता तोड़ लिया है विश्व के तमाम पीड़ित देश एक मत से चीन के ऊपर आक्रामक रुख अपनाए हुए हैं ।इन परिस्थितियों में विश्व समुदाय को ध्यान देना होगा कि इसका समाधान क्या है ?कहीं इस विभीषिका में तीसरे की पृष्ठभूमि तैयार ना हो जाए।

तरुण सिंह